सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 162

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
फरवरी–2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः॥

श्री सद्गुरुनाथ दादा और उनका कार्य

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

श्री सद्गुरुनाथ दत्तात्रय भागवत यानी दादा भागवत बीसवीं शताब्दी में आध्यात्म मार्ग के अधिकारी पुरूष है। विश्व के सभी मानव आपस में भिन्नभाव न रखते हुए मानवता धर्म को स्वीकार करें इसलिए वं. दादाजी ने अपना पूर्ण जीवन ऐसे गुरुमार्ग की निर्मिती में समर्पित किया जिसमें सामान्य मनुश्यों के जीवन की अड़चनों के लिए सरल व सुलभ निराकरण है, भक्ति रस से युक्त आरतियाँ है, शारीरिक आरोग्य तथा आध्यात्मिक विकास के साधन है और सामाजिक कर्त्तव्य निभाने के लिए विश्वस्त निधि है (श्री. साई स्वाध्याय मंडल)।

श्री सद्गुरुनाथ दादाजी का जन्म पौष अमावस्या दिनांक 6 फरवरी 1921 को महाराष्ट्र के सातारा में भागवत परिवार में हुआ। उनके पिता जी का नाम भास्कर तथा माता जी का नाम श्रीमती मनोरमा था। उनका परिवार अनेक पीढ़ियों से दत्तभक्त था और वही संस्कार जन्म से ही वं. दादाजी पर हुए।

इस विश्व में जो त्रिगुणात्मक शक्ति है उसका कार्य उत्पत्ति, स्थिति, लय इन तीन तत्वों द्वारा होता है। इसी तरह वं. दादाजी का कार्य भी तीन पंथों के एकरूपत्व पर आधारित है और वे तीन पंथ है दत्तपंथ, नाथपंथ और सूफीपंथ। आज दुनिया श्री साईनाथ महाराज को अवतार मानकर पूजती है। परन्तु मानवीय कल्याण के लिए देह धारण करना यह क्रिया होने के लिए उस त्रिगुणात्मक शक्ति को अपने मूल स्थान से धीरे–धीरे नीचे धरती पर आना होता है। इसलिए इस अवतार कार्य की योजना अनेक शतकों पहले ही होती है। श्री साईनाथ महाराज ने इस आधुनिक युग के लिए अवतार लिया और प्रखर ऐसे देवतत्व को सर्वसामान्य लोगों के लिए सहज, सुलभ व आसान किया।

दत्तपंथ ने नाथपंथ को अनुग्रहित किया है और नाथपंथ ने सूफीपंथ को अनुग्रहित किया है। हजारों साल पहले नाथपंथ का उदय हुआ। तब से आज तक मानवीय जीवन में बहुत से स्थित्यंतर हुए। श्री साईनाथ महाराज ने अवतार लेकर इस बदले हुए मानवीय जीवन को ईश्वरीय तत्व की ओर जाने का सुलभ, आसान मार्ग दिखाया है। श्री गोरक्षनाथ जी का जन्म राख (जले हुए गोबर व लकड़ी) यानी 'उदी' इस माध्यम द्वारा हुआ है। उदी को नाथपंथ की 'संजीवनी' कहते है वही उदी श्री साईनाथ महाराज यानी दसवें नाथ इन्होंने आगे के कार्य के लिए सिद्ध की और वही उदी श्री सद्गुरुनाथ दादाजी ने (ग्यारहवें नाथ) आगे के कार्य के लिए सिद्ध की। इस कार्य के

लिए श्री दत्त महाराज 'उत्पत्ति अवस्था' है, श्री साईनाथ महाराज 'स्थिति अवस्था' है और इस आविश्कार का पूर्णत्व यानी 'लय अवस्था' वं. दादाजी ने साकार की है। श्री साईबाबा ने जिस कारण के लिए अवतार लिया वह कारण साकार करने का कार्य वं. दादाजी ने किया है। श्री साईबाबा के अवतार का पूर्णत्व वं. दादाजी के अवतार कार्य में हुआ।

ईश्वरीय कृपा प्राप्त करना तुलनात्मक दृष्टि से जितना कठिन है उससे ज्यादा मुश्किल है वह कृपा लोककल्याण के लिए किस मार्ग से साकार करना है यह निश्चित करना। आज की परिस्थिति में कृपा प्राप्त करने वाले साधक को यह प्रथम निश्चित करना होता है कि सामान्य लोग इस मार्ग पर सहजता से किस प्रकार आचरण कर सकते है तथा उनको इस मार्ग द्वारा कैसे लाभ प्राप्त होगा? उसके लिए वं. दादाजी ने श्री तेली महाराज व श्री भैरवनाथ जी इनके मार्गदर्शन के अनुसार सेवा शुरु की। उन्होंने कभी भी खुद के लिए कुछ भी नहीं मांगा। समय–समय पर उन्हें सिद्ध पुरूषों तथा विभूतियों द्वारा जो मार्गदर्शन हुआ उसके अनुसार उन्होंने आज्ञा पालन करके लोककल्याण के लिए दुर्लभ ऐसे तत्व यानी अन्न ब्रह्म से परब्रह्म तक सब कुछ प्राप्त किया। श्री साईनाथ महाराज की आज्ञा के अनुसार उन्होंने श्री क्षेत्र औदुंबर, यहाँ ढ़ाई साल सेवा करके वंशविमोचन और कर्मविमोचन ये साधन सिद्ध किए और परलोक का अभ्यास किया। उसी के साथ आगे आने वाले समय में गुरुकार्य के लिए 'शक्तिपीठ' की स्थापना करनी थी उसकी नींव भी इसी औदुंबर सेवा में रखी गई। श्री दत्त महाराज की झोली प्राप्त करने के लिए (जिसमें ॐकार साधना, कारणदीक्षा है) वं. दादाजी ने फिर से आज्ञानुसार ऐहिक प्राप्ति का त्याग किया, कार्य की जिम्मेदारी सेवकों पर सौंपी। एक वर्ष तक यानी 11 पौर्णिमा श्री क्षेत्र नरसोबावाड़ी यहाँ हवन करके महारूद्र स्वाहाकार किया और श्री. नरसिंहसरस्वती महाराज से ॐकार सौम्य करके प्राप्त किया। अलग–अलग साधन प्राप्त करने के लिए वं. दादाजी ने बहुत कष्ट उठाए, कठिन सेवा की, वैयक्तिक जीवन में बहुत त्याग किए लेकिन इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इसमें से अंशमात्र भाग भी उन्होंने भक्तों से नहीं करवाया। अति कष्ट से उन्हें जो साधन प्राप्त हुए थे वे उन्होंने भक्तों को अति सुलभता और सहजता से दिए। साधन प्राप्त करने के लिए उन्हें कठिन परिश्रम करने पड़े है इसका एहसास भी उन्होंने भक्तों को नहीं होने दिया। बाहर जगत में अन्य मार्ग और वं. दादाजी का गुरुमार्ग इनमें यही महत्त्वपूर्ण अन्तर है।

गुरुमार्ग में जो सिद्ध–सिद्धांत पद्धति है वह नाथपरंपरा है। आज तथा आने वाले समय में लोगों के लिए इस सिद्ध–सिद्धांत पद्धति को सरल करने का कार्य वं. दादाजी ने किया है। उसी के साथ यह कार्य केवल खुद तक ही सीमित ना रहकर निरंतर स्वरूप में चलता रहे और अधिक संख्या में लोग इसमें लाभ प्राप्त करते रहे इसलिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाए। अपितु वे खुद सिद्ध अवस्था में थे तथापि आरती, ॐकार साधना, मुलाकात, कामकाज आदि द्वारा कार्यकेंद्र लोककल्याण के लिए सिद्ध हो इसलिए अलग–अलग कार्यकेंद्रों पर कुछ समय तक खुद उपस्थित रहकर उन्होंने सेवकों को सिद्ध अवस्था तक लाने का प्रबंध किया। भक्तों को 3 विमोचनों तथा 5 दीक्षाओं द्वारा पारमार्थिक अवस्था का लाभ कराया। उन्होंने खुद अभ्यास करके पीढ़ियों से चलते आ रहे आध्यात्मिक मार्ग में बदलाव किए और आध्यात्मिक मार्ग को एक नई दिशा दी। वं. दादाजी की यह कार्य पद्धति अद्वितीय है क्योंकि इसमें परिवार की पिछली सात पीढ़ियों के दोष निवारण होकर आगे आने वाली सात पीढ़ियों का प्रबंध है।

वं. दादाजी ने 3 आलौकिक विमोचन साध्य किए। घराने के दोष जो विद्या, संपत्ति और संतती का नाश करते है ऐसे दोषों के विमोचनार्थ 'वंश विमोचन' है। खुद का कर्म अनुकूल करने के लिए 'कर्म विमोचन' है और आप जिस परिवार में रहते है उसमें प्रत्येक व्यक्ति का ऋणानुबंध एक–दूसरे से सुसंबद्ध पूरक हो इसलिए 'ऋणमोचन' है। विमोचन पद्धति को शब्दरूप यानी संकल्प युक्त करने का महान व कठिन कार्य भी वं. दादाजी ने किया। इसके लिए जिन विभूतियों के आशीर्वाद व कृपाप्राप्ति की आवश्यकता थी। उन स्थानों पर जाकर वं. दादाजी ने उन साधनों की प्राप्ति की।

वं. दादाजी ने मानवीय जीवन का विकास शास्त्रीय पद्धति से तथा कोमलता से प्राप्त किया। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति इस मार्ग की ओर प्रापंचिक अड़चनों के निवारणार्थ तथा ऐहिक प्राप्ति के लिए ही आया था। भक्तों को यह प्राप्ति कराते समय अनजाने में वं. दादाजी ने दीक्षापरत्वे भक्तों के पारमार्थिक जीवन को आकार दिया है। अन्य मार्गों में प्रथम काया फिर वाचा और फिर मन इस तरह आध्यात्मिक प्रवास होता है। इसमें उपवास, यम–नियम, बंधन आदि संस्कार काया पर किए जाते है परन्तु इनके कारण उस व्यक्ति के आचरण में, बोलने में प्रेम व सहिष्णुता नहीं आ पाती बल्कि वह व्यक्ति अधिक क्रोधित व कर्मठ बनता है और आध्यात्मिक मार्ग में आगे नहीं बढ़ पाता। वं. दादाजी ने हमें ऐसी कार्य पद्धति दी है जिसमें प्रथम मन पर संस्कार होते है 'मन' इस अवस्था पर संस्कार होने के कारण वहाँ धारण हुई गुरुकृपा प्रथम वाचा की ओर और फिर काया की ओर प्रवाहित हुई तब प्राप्त हुई गुरुकृपा का हमें ज्ञान हुआ। आज हम यह अनुभव करते है कि वं. दादाजी ने हमें बंधनों में नहीं रखा, हमें यम–नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं किया फिर भी अपने आप धीरे–धीरे हमारी काया, देह अब पहले की तुलना में विषयों की ओर नहीं भागती है। यह क्रिया हमारे अनजाने में और सहजता से हुई है और यह अति महत्त्वपूर्ण है।

कर्म कम हुए तो जन्म कम होते है यह सदियों से चलता आ रहा सिद्धांत है। जन्म ही घटाए तो कर्म को अस्तित्व ही नहीं रहेगा यह अलौकिक सिद्धांत वं. दादाजी ने रखा और वह सिद्ध करके दिखाया। इसके लिए उन्होंने खुद के सामर्थ्य से जन्म परपंरा में बदलाव किया। यह हम सहजता से बोल रहे है लेकिन इस तरह का स्थित्यंतर करने के लिए वं. दादाजी का क्या सामर्थ्य होगा

इसका हम सबको विचार करना आवश्यक है। तभी हमारा इस इहजगत में क्या कर्त्तव्य है इसका एहसास हमें होगा।

हम जब इस गुरुस्थान में आए थे तब 'कर्माधीन' थे। वं. दादाजी ने हमें 'कर्म आधीन' यह अवस्था प्राप्त कराई है। उस समय हम अपनी अड़चनों के बारे में प्रश्न पूछने आए थे और अब हम औरों को उनके प्रश्नों के लिए मार्गदर्शन करते है। इस अवस्था तक पहुँचना यह कितना बड़ा स्थित्यंतर है इसका विचार हम सबने करना आवश्यक है।

वं. दादाजी और सौ. वहिनी इनका जीवन जिन दो शब्दों द्वारा वर्णन किया जा सकता है वे शब्द है खुद के लिए 'त्याग' और सबके लिए 'प्रेम'। हम सबने इसका अनुभव किया है और आज भी कर रहे है। उनके लिए 'गुरुमाउली' यह शब्द सार्थक है।

अब हमें इस महान कार्य को जिम्मेदारी से निभाने का कर्त्तव्य करना है। आगे आने वाले समय में समिति का कार्य समाज के लिए 'आधारस्तंभ' साबित होगा। आज हमें कारणदीक्षा प्राप्त हुई है। कारणदीक्षापरत्वे धारण होने वाली ॐकार शक्ति हम हमारे दैनंदिन जीवन में हमारे व्यवहार द्वारा औरों की ओर प्रवाहित करेंगे। इतनी आसान व सरल कार्यपद्धति वं. दादाजी ने हमें दी है। कारणदीक्षा की यह ॐकार शक्ति प्रवाहित होते–होते इसी शक्ति द्वारा विश्वशांति निर्माण होने का कार्य अवश्य होगा।

वं. दादाजी ने भिन्न भाव न रखते हुए सभी धर्म और जाति के लोगों को मार्गदर्शन होगा ऐसी कार्यपद्धति हमारे सामने रखी है। वं. दादाजी द्वारा दी हुई ॐकार साधना सर्वव्यापी है। कोई भी इसको स्वीकार कर सकता है। वैचारिक स्तर पर अलग–अलग धर्म के अनुयायी वादविवाद कर सकते है लेकिन ॐकार की लहरें और उनका शरीर व मन को होने वाला एहसास कोई भी ठुकरा नहीं सकता।

अनेक सत्पुरूषों ने 'गरीबों की सेवा करो' ऐसा उपदेश लोगों को किया है परन्तु 'सेवा करो' मतलब क्या करना चाहिए? यह उन्होंने नहीं बताया और वह अवस्था उन्होंने अपने भक्तों को प्राप्त नहीं कराई। वं. दादाजी ने हमें बताया है कि दुर्लभ मनुष्य जन्म प्राप्त होने के बाद हमें अनमोल, ऐसी देहिक संपत्ति प्राप्त होती है। उस संपत्ति के बारे में जो अज्ञानी है वे गरीब है और उनकी सेवा करना यानी उन्हें जन्म का ज्ञान कराना यह सही मायने में कार्य है। मनुष्यों का जन्मकारण उदित होने में ऋणानुबंध अड़चन निर्माण करते है। उनके निवारणार्थ वं. दादाजी ने मानवीय जीवन का इहलोक व परलोकपरत्वे अभ्यास व पृथःकरण किया। मानवीय जीवन में दुख निर्माण होने के कारण ढूंढ निकाले और उनके लिए आसान, सरल ऐसी निराकरण पद्धति हमारे सामने रखी कार्यपद्धति में भजन (आरती) को मनोरंजन से साधन अवस्था में परिवर्तित किया। भक्तों की पात्रता तथा अपात्रता का विचार न करते हुए उन्हें दीक्षा दी। दो तपों तक वं. दादाजी ने अविरत कार्य किया, उन्हें उच्च मान–सम्मान प्राप्त हुआ और इसी क्षण उन्होंने गुरुमार्ग में परमोच्च ऐसा आदर्श सबके सामने रखा। उन्हें प्राप्त हुआ सर्वोच्च स्थान उन्होंने भक्तों के लिए खाली किया, वे खुद उस स्थान से दूर हुए। त्याग का यह अलौकिक उदाहरण हमें अन्य कहीं नहीं मिलेगा।

श्री साई आध्यात्मिक समिति को सूफीपंथ का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। वह आशीर्वाद कैसे धारण करना है यह वं. दादाजी ने भक्तों को सिखाया और संगीत इस माध्यम द्वारा ईश्वर की आराधना शुरु की। पीढ़ियों से चलती आई रूढ़ी परपंराओं से मनुष्य को मुक्त किया और अभ्यास पूर्ण भक्ति कैसे करनी है यह सिखाया। वैयक्तिक मुक्ति अथवा मोक्ष मांगने की अपेक्षा सामान्य लोगों के कल्याणार्थ तथा उन्हें समाधान देने के लिए हम क्या कर सकते है?इसका विचार करने की सीख दी। यह सीख सूफी संतों द्वारा प्राप्त हुई है। सूफी संतों ने खुद के लिए मुक्ति नहीं मांगी। उन्हें प्राप्त हुए अद्वितीय देहिक माध्यम का परिपूर्ण उपयोग उन्होंने सामान्य लोगों के कल्याण के लिए किया। लोककल्याण और विश्वशांति का यह ऐसा कार्य भविष्य में व्यापक (विशाल) होगा और अज्ञान के अंधेरे में रास्ता ढूंढने वाले मनुष्य के लिए यह कार्य आशा की किरण साबित होगा और उसे मानवतावाद की ओर ले जाने का कारण बनेगा यह निश्चित है।

मनुष्य जन्म कर्मपरत्वे होता है फिर भी जन्म के समय लाया हुआ कर्मवलय 5 ऋणानुबंधों से हितसंबंधित होता है और उनकी अनुकूलता–प्रतिकूलता से जीवन विकसित करने के लिए ईश्वर कृपा की आवश्यकता होती है। ईश्वरकृपा की प्राप्ति के लिए मनुष्य सदियों से कुलदेवी–देवता तथा उपास्य देवताओं की पूजा, आराधना कर रहा है परन्तु ऋणानुबंधों की अनुकूलता के लिए यह कृपा मनुष्य की देह में धारण होना आवश्यक होता है और उसके लिए श्री गुरु की सहायता अनिवार्य है। गुरुकृपा प्राप्ति के लिए आवश्यक सेवा निश्चित करना वं. दादाजी के कार्यक्रम का सूत्र था। वं. दादाजी ने भक्तों से दिन के 24 घंटों में से केवल आधा घंटा ॐकार साधना के लिए देने को कहा है। साधना में ॐकार, न्यास, नामस्मरण यह उचित परिमाण के अनुसार तथा बारह अंगों का विचार करके अवधान पूर्वक ॐकार का उच्चार करते है तो केवल आधा घंटे की साधना से भक्तों को शारीरिक स्वास्थ्य तथा मानसिक शांतता प्राप्त होती है और उनकी सूक्ष्म देह का विकास भी होता वं. दादाजी के अनुसार सामुदायिक साधना महत्त्वपूर्ण है। एकांत में साधना करके आपको जो अनुभव आते है उसकी चर्चा आप दूसरों के साथ करके उनके मन में अनावश्यक प्रश्न निर्माण करते है। इसकी अपेक्षा सामुदायिक साधना करके उसका लाभ जगत में दुखी लोगों को कराना अधिक फलदायी होता है ऐसी वं. दादाजी की धारणा थी।

वं. दादाजी ने देवी, देवता, संत, विभूतियों इनकी कृपा आशीर्वाद से त्रिगुणात्मक शक्ति का पीठ स्थापन किया। यह शक्तिपीठ गोवा में है।

वं. दादाजी ने प्रथम लोकसंग्रह किया फिर लोगों को उनकी सामाजिक जिम्मेदारियों का एहसास दिलाया। वं. दादाजी ने समझाया कि जीवन में सुख, शांति प्राप्त होने के लिए अपनी मासिक प्राप्ति में से नियमित रूप में दानधर्म होना आवश्यक है। व्रत, मन्नते, तीर्थ यात्रा, देवतार्जन, होम–हवनादि विधि इनमें पैसा खर्च होने की अपेक्षा वह शिस्तबद्ध और नियमित दानधर्म के लिए उपयुक्त हो इसलिए वं. दादाजी ने 'श्री साई स्वाध्याय मंडल' इस विश्वस्त संस्था की स्थापना की। खुद को प्राप्त हुई गुरुदक्षिणा स्थापना के समय मंडल को देकर उन्होंने भक्तों के समक्ष कर्त्तव्यपालन का आदर्श रखा। आज यह संस्था प्रसिद्ध हुई है। संस्था के विश्वस्त निधि से शैक्षणिक तथा वैद्यकीय संस्थाओं को प्रतिवर्ष दान दिया जाता है। जरूरत मंद विद्यार्थियों तथा वैयक्तिक, जरूरतमंद और महंगी शल्यक्रियाओं के लिए दान देने का महान कार्य इस मंडल की ओर से होता है।

वं. दादाजी ने साधन पत्रिका लिखी। इसमें उन्होंने भक्तों को कार्यपद्धति की पहचान तथा प्रतिमाओं का कार्य समझाया है। उन्होंने 'गुरुप्रसाद' और 'आत्मनिवेदन' ये दो महान ग्रंथ लिखे। गुरुप्रसाद में निराकरण पद्धति, ॐकार साधना और गुरुमार्ग इनका सरल शब्दों में विवेचन है। वं. दादाजी ने केवल 21 दिनों में यह 350 पृश्ठों का ग्रंथ लिखा है। यह ग्रंथ पूर्णतः स्वानुभव पर आधारित है, इसमें संदर्भ सूची नहीं है। गुरुकृपा से उनके खुद के जीवन में गुरुकार्य कैसे घटित होता गया इसका विवेचन 'आत्मनिवेदन' इस ग्रंथ में है। आध्यात्मिक मार्ग का अवलंबन करना मतलब बेलगांव के पास श्री क्षेत्र बालेकुंद्री है। यह श्री पंथ महाराज जी का स्थान है। उनकी कृपा से वं. दादाजी को शब्द ब्रह्म का लाभ हुआ। वं. दादाजी श्री पंत महाराज की आरतियाँ उत्कंठ भावना से गाते थे। उनका स्वर बहुत मीठा था। तब वे आरती सुनने वाले भक्तों को भक्तिरस का अत्युच्च आनंद तथा श्री पंत महाराज जी का आशीर्वाद प्राप्त कराते थे।

अनुशासन युक्त आचरण तथा सेवावृत्ति यह वं. दादाजी का स्थायीभाव था। परमार्थ का आचरण मतलब अस्वच्छता तथा अनुशासनहीनता उन्हें कदापि मंजूर नहीं थी। वे अपने कपड़े खुद धोते थे। सामान्य मनुष्यों की तरह वे शर्ट और पेंट पहनते थे। खुद अपने कपड़ों को इस्त्री करते थे। भक्तों को मिलते समय वे स्वच्छ, सफेद धोती परिधान करते थे। नियमित व्यायाम, मित आहार और दैनंदिन जीवन में कर्त्तव्य बुद्धि का उन्होंने स्वीकार किया था। सोने से पहले वे नियमित रूप से शास्त्रीय संगीत श्रवण करते थे। गुलाबी गोरा रंग, तेजस्वी नेत्र और मन को प्रभावित करने वाली वाणी ऐसा उनका व्यक्तित्व था। कोई भी विषय समझाने के लिए या निरूपण के लिए उन्होंने कभी भी किसी पोथी, पुराण, ग्रंथ अथवा संतों का आधार (तममितमबदबम) नहीं लिया। उन्होंने हमेशा स्वानुभवसिद्ध तत्वज्ञान ही बताया है। उनका विषय होता था – मानवीय जीवन मीमांसा। मानवों को अपने जन्मकारण का तथा जीवन का ज्ञान हो इसलिए उन्होंने 15 सम्मेलन लिए सम्मेलन में उन्होंने 'जीवन उत्पत्ति व कार्य' ये विषय भक्तों को समझाया।

वं. दादाजी द्वारा स्थापित इस कार्य के कार्यकेंद्र भारत के अनेक राज्यों में तथा विदेशों में भी है। प्रत्येक कार्यकेंद्र पर भक्तों को वैयक्तिक मागदर्शन किया जाता है तथा ॐकार साधना सिखाई जाती है। परमेश्वर का स्थान स्वच्छ तथा अनुशान युक्त होना चाहिए यह सीख खुद वं. दादाजी ने अपने आचरण द्वारा भक्तों को दी है। उसी के अनुसार प्रत्येक कार्यकेंद्र पर समय के अनुसार ही ॐकार साधना, आरती तथा अन्य कार्यक्रम होते है। कार्यकेंद्रों पर हमेशा शांत और मंगल वातावरण होता है। कार्यकेंद्रों पर भविष्य नहीं बताया जाता अपितु भविष्य बनाना हमारे ही हाथों में होता है और उसके लिए निश्चित सेवाधर्म की सीख भक्तों को कार्यकेंद्रों पर दी जाती है। कार्यकेंद्रों पर नियुक्त सेवक अपनी नौकरी, व्यवसाय संभालकर नियमित रूप से सेवा करते है। विद्यार्थियों के लिए 'ज्ञान संवेदना' वर्ग लिया जाता है।

हमारा आचरण कैसा होना चाहिए? इसके लिए वं. दादाजी ने 'परमार्थ प्रश्नावली' लिखी है और बताया है कि प्रत्येक व्यक्ति ने रात को सोने से पहले उसका मनन करके उस दिन के अपने आचरण की समीक्षा करनी चाहिए।

शक्तिपीठ में जो शक्ति है उसका प्रतीक मतलब 'प्रतिमा' है। वं. दादाजी ने प्रतिमाऐं सिद्ध करके भक्तों को दी और इस गुरुमार्ग के सिद्धांतों का लाभ भविष्यकाल में संपूर्ण विश्व के मानवों को हो इसका प्रबंध किया।

इस तरह कार्य सुचारु रूप से चल रहा है तथा सभी धर्म के लोग आत्मिक स्तर पर एक होकर अपने जीवन में साधना का समाधान प्राप्त कर रहे है इसका अवलोकन वं. दादाजी ने कुछ वर्षों तक किया और गुरुआज्ञा से उन्होंने विजयादशमी 1956 को जिस लोककल्याण तथा विश्वशांति के कार्य की स्थापना की थी उसका पूर्णतत्व भी गुरुआज्ञा से ही विजयादशमी 1989 इस दिन किया। बाद में उन्होंने धीरे–धीरे अपनी देह विसर्जित करते हुए जेष्ठ वदय पंचमी दिनांक 2 जुलाई 1991 इस दिन सिद्ध अवस्था में देहत्याग किया और वं. श्री साईस्वरूप से एक रूप हुए।

।। शुभं भवतु।।